09 मार्च 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित समाचार उपलब्ध नहीं हैं।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

1. **भारत, चार देशों के EFTA ब्लॉक के बीच 10 मार्च को FTA पर हस्ताक्षर होने की संभावना**

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

आज इससे संबंधित समाचार उपलब्ध नहीं हैं।

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित समाचार उपलब्ध नहीं हैं।

E. संपादकीय:

सामाजिक मुद्दे

1. **भारत द्वारा अपनी श्रम शक्ति का इष्टतम उपयोग नहीं किया जाना**

सामाजिक न्याय

1. **सतत विकास के आधार के रूप में लैंगिक समानता**

F. **प्रीलिम्स तथ्य:**

1. **अरब सागर में निगरानी रखने के लिए ब्रह्मोस से लैस नौसेना का मिनिकॉय बेस**
2. **केंद्र ने पीएम सौर नि:शुल्क बिजली' योजना में बदलाव किया**
3. **खाने की थाली की कीमतों के अनुसार फरवरी में शाकाहारी थाली की कीमतें 7% बढ़ीं**
4. **फ़िलिस्तीन में बस्तियों का विस्तार करना एक 'युद्ध अपराध': संयुक्त राष्ट्र**

G. **महत्वपूर्ण तथ्य:**

आज इससे संबंधित समाचार उपलब्ध नहीं हैं।

H. **UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:**

I. **UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न**:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित

भारत, चार देशों के EFTA ब्लॉक के बीच 10 मार्च को FTA पर हस्ताक्षर होने की संभावना

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

विषय: द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से संबंधित और/अथवा भारत के हितों को प्रभावित करने वाले करार

प्रारंभिक परीक्षा: EFTA

मुख्य परीक्षा: 'भारत और चार देशों वाले EFTA ब्लॉक का महत्व'

सन्दर्भ: भारत और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (EFTA), जिसमें स्विट्जरलैंड, फिनलैंड, नॉर्वे और लिकटेंस्टीन शामिल हैं, 10 मार्च को लंबे समय से प्रतीक्षित मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर हस्ताक्षर करने

वाले हैं। इस समझौते को भारत-EFTA व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौता (TEPA) नाम दिया गया है। इसका उद्देश्य दोनों पक्षों के बीच व्यापार और निवेश संबंधों को मजबूत करना, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

समझौते संबंधित विवरण

- निवेश प्रतिबद्धताएँ: TEPA से अगले 15 वर्षों में EFTA देशों से भारत में 100 अरब डॉलर का निवेश आकर्षित होने की संभावना है, जिससे संभावित रूप से दस लाख रोजगार सृजन होंगे।
- भाग लेने वाले देश: व्यापार मंत्रियों सहित भारत और EFTA दोनों देशों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर समारोह में भाग लेने की उम्मीद है, जो समझौते के महत्व को रेखांकित करेगा।
- व्यापार घाटे का समाधान करना: FTA को वर्तमान में EFTA ब्लॉक के साथ भारत के बड़े व्यापार घाटे को कम करने के साधन के रूप में देखा जाता है, जो अधिक संतुलित व्यापार संबंधों को प्राप्त करने की दिशा में एक रणनीतिक कदम का संकेत देता है।

समझौते का महत्व

- आर्थिक विकास: TEPA दोनों पक्षों की मजबूती का लाभ उठाते हुए, भारत और EFTA देशों के बीच बढ़े हुए व्यापार और निवेश प्रवाह को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए तैयार है।
- रोजगार सृजन: अनुमानित निवेश प्रवाह में पर्याप्त संख्या में रोजगार सृजन, रोजगार के अवसर प्रदान करने और आजीविका बढ़ाने में योगदान करने की क्षमता है।
- व्यापार साझेदारी का विविधीकरण: EFTA ब्लॉक के साथ मजबूत संबंध बनाकर, भारत का लक्ष्य अपनी व्यापार साझेदारी में विविधता लाना, किसी एक बाजार पर निर्भरता कम करना और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के सामने लचीलापन बढ़ाना है।

मुद्दे

- कार्यान्वयन चुनौतियाँ: संभावित लाभों के बावजूद, TEPA के सफल कार्यान्वयन में नियामक सामंजस्य, बाज़ार पहुंच बाधाओं और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुपालन से संबंधित बाधाएं सामने आ सकती हैं।

- घरेलू उद्योगों की सुरक्षा: यह सुनिश्चित करना कि घरेलू उद्योग पर्याप्त रूप से संरक्षित हों और बढ़ती विदेशी प्रतिस्पर्धा का सामना करने में सक्षम हों, समझौते के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण होगा।

समाधान

- क्षमता निर्माण: व्यापार और निवेश प्रवाह को सुविधाजनक बनाने के लिए संस्थागत क्षमताओं और नियामक ढांचे को मजबूत करना TEPA के लाभों को अधिकतम करने के लिए आवश्यक होगा।
- क्षेत्र-विशिष्ट नीतियां: बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के मद्देनजर कमजोर क्षेत्रों का सहयोग करने और उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए नीतियां बनाने से घरेलू उद्योगों को सुरक्षित रखने में मदद मिल सकती है।
- सतत निगरानी: विभिन्न क्षेत्रों पर समझौते के प्रभाव का आकलन करने और परिणामों को अनुकूलित करने हेतु आवश्यक समायोजन करने के लिए नियमित निगरानी और समीक्षा तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।

सारांश: भारत-EFTA TEPA पर आसन्न हस्ताक्षर भारत के व्यापार संबंधों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो आर्थिक विकास और रोजगार सृजन के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

संपादकीय-द हिन्दू

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित

भारत द्वारा अपनी श्रम शक्ति का इष्टतम उपयोग नहीं किया जाना

सामाजिक मुद्दे

विषय: गरीबी और विकासात्मक मुद्दे

मुख्य परीक्षा: भारत की श्रम शक्ति के उपयोग में निहित चुनौतियाँ

सन्दर्भ:

- भारत आय सृजन के लिए श्रम पर बहुत अधिक निर्भर है, जिसमें अनौपचारिक रोजगार परिदृश्य पर हावी है।

- श्रम बाजार की गतिशीलता सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि, जीवन स्तर और समग्र आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

मुद्दे

अनौपचारिक रोज़गार वर्चस्व:

- लगभग 90% भारतीय कार्यबल अनौपचारिक रोजगार में संलग्न है, जिसमें रोजगार सुरक्षा, लाभ और सामाजिक सुरक्षा का अभाव है।
- अनौपचारिक रोजगार में आकस्मिक मजदूर, स्व-रोज़गार वाले व्यक्ति और यहां तक कि कुछ नियमित वेतनभोगी श्रमिक भी शामिल हैं।

रोजगार की गुणवत्ता:

- हालिया डेटा श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में वृद्धि और बेरोजगारी दर में कमी दर्शाता है, जो मुख्य रूप से स्व-रोज़गार के कारण है।
- हालाँकि, बारीकी से जांच करने पर पारिवारिक अवैतनिक श्रम में वृद्धि की चिंताजनक प्रवृत्ति का पता चलता है, जो रोजगार गुणवत्ता में गिरावट का संकेत देता है।

आय की स्थिति:

- हालाँकि औसत दैनिक आय में मामूली वृद्धि हुई है, लेकिन यह सभी प्रकार के रोजगारों में एक समान नहीं है।
- वेतनभोगी श्रमिकों और स्व-रोज़गार वाले लोगों की वास्तविक कमाई में स्थिरता देखी गई है, जबकि अनौपचारिक श्रमिकों के मामले में निम्न आधार से ही, लेकिन मध्यम वृद्धि देखी गई है।

महत्त्व

- श्रम बल की संरचना और कमाई की स्थिति आर्थिक कल्याण और सामाजिक कल्याण के महत्वपूर्ण संकेतक हैं।
- निम्न-गुणवत्ता वाले कार्य की अधिक मौजूदगी उत्पादकता, आय असमानता और दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता को लेकर चिंता पैदा करती है।

समाधान

- **बढ़ी हुई रोजगार गुणवत्ता:**
    - नीतियों में उचित वेतन, रोजगार सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा के साथ गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर पैदा करने पर ध्यान होना चाहिए।
    - अनौपचारिक क्षेत्रों को औपचारिक बनाने और श्रम बाजार नियमों में सुधार की पहल आवश्यक है।
- **कौशल विकास और प्रशिक्षण:**
    - कौशल विकास कार्यक्रमों में निवेश करने से कार्यबल की रोजगार क्षमता बढ़ सकती है और ऊर्ध्वगामी गतिशीलता को बढ़ावा मिल सकता है।
    - उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना और छोटे व्यवसायों के लिए सहायता प्रदान करना उच्च उत्पादकता के साथ स्व-रोज़गार के रास्ते तैयार कर सकता है।
- **सामाजिक सुरक्षा जाल:**
    - स्वास्थ्य देखभाल, पेंशन योजनाओं और बेरोजगारी लाभों सहित सामाजिक सुरक्षा जाल को मजबूत करने से अनौपचारिक श्रमिकों की कमजोरियों को कम किया जा सकता है।
    - विशिष्ट श्रम बाजार चुनौतियों का समाधान करने हेतु महिलाओं और युवाओं जैसे कमजोर समूहों के लिए लक्षित हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

सारांश: भारत में श्रम शक्ति का इष्टतम से कम उपयोग समावेशी विकास और आर्थिक विकास के लिए बड़ी चुनौतियाँ पैदा करता है। रोजगार की गुणवत्ता, कमाई में असमानता और अनौपचारिक क्षेत्र की कमजोरियों का समाधान करना जनसांख्यिकीय लाभांश का प्रभावी ढंग से उपयोग करने तथा सतत और न्यायसंगत विकास सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है।

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित

सतत विकास के आधार के रूप में लैंगिक समानता

सामाजिक न्याय

विषय: स्वास्थ्य, शिक्षा से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे, मानव संसाधन

मुख्य परीक्षा: सतत विकास के आधार के रूप में लैंगिक समानता

संदर्भ:

- **लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण सतत विकास के आवश्यक घटक हैं।**
- **लैंगिक समानता और सतत ऊर्जा विकास के बीच के अंतरसंबंध को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है लेकिन इसका अधिक महत्व है।**

मुद्दे

ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका:

- **महिलाएं ऊर्जा पहुंच, उत्पादन और उपभोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी उन्हें अपनी भागीदारी को सीमित करने वाली बाधाओं का सामना करना पड़ता है।**
- **आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच का अभाव महिलाओं और बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जिससे उन्हें बायोमास और केरोसिन जैसे पारंपरिक ईंधन स्रोतों से स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ता है।**

ऊर्जा क्षेत्र में लैंगिक असमानता:

- **ऊर्जा क्षेत्र लैंगिक रूप से असंतुलित बना हुआ है, जिसमें महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफ़ी कम है।**
- **शैक्षिक असमानताएं, सीमित तकनीकी प्रशिक्षण अवसर और असमान कंपनी नीतियां इस लैंगिक अंतराल में योगदान करती हैं।**

महत्त्व

- सतत विकास और सतत विकास लक्ष्यों (SDG), विशेष रूप से SDG5 (लैंगिक समानता), SDG7 (स्वच्छ ऊर्जा), और SDG12 (जलवायु कार्रवाई) को प्राप्त करने के लिए लैंगिक समानता महत्वपूर्ण है।
- ऊर्जा क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण से नवीन समाधान, उत्पादकता में वृद्धि और बेहतर सामाजिक और पर्यावरणीय परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

समाधान

ऊर्जा नीतियों में लिंग को मुख्य धारा में लाना:

- सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को सभी स्तरों पर ऊर्जा नीतियों में लैंगिक मुख्यधारा को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- प्रयासों में ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं की भूमिकाओं की धारणा बदलने तथा शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करने पर ध्यान होना चाहिए।

सक्षम वातावरण और सहयोग:

- सरकारों, शासन विरोधी तत्त्वों और परोपकारी संगठनों सहित हितधारकों को ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं की सार्थक भागीदारी के लिए एक सक्षम वातावरण बनाना चाहिए।
- वुमेन एट द फ़ोरफ़्रंट कार्यक्रम और एनर्जी ट्रांज़िशन इनोवेशन चैलेंज (ENTICE) जैसी पहल महिलाओं को सतत ऊर्जा प्रथाओं को प्रचालित करने के लिए मंच प्रदान करती हैं।

वितरित नवीकरणीय ऊर्जा (DRE) को बढ़ावा देना:

- सोलर मामाज़ (Solar Mamas) जैसी DRE पहल, सौर इंजीनियरिंग में प्रशिक्षण प्रदान करके और स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच बढ़ाकर महिलाओं को सशक्त बनाती है।
- राज्य सरकारों और परोपकारी संगठनों के बीच सहयोग से DRE को अपनाने में तेजी आ सकती है, जिससे महिलाओं की उत्पादकता और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा।

निष्कर्ष

- ऊर्जा में लैंगिक अंतर को कम करने से आर्थिक विकास, नवाचार तथा सामाजिक और पर्यावरणीय परिणामों में सुधार हो सकता है।
- लैंगिक-उत्तरदायी पहलों ने स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में सफलता दिखाई है, जो अधिक समावेशी और सतत दुनिया के लिए महिलाओं की शक्ति के उपयोग के महत्व को उजागर करती है।

सारांश: ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाना न केवल सामाजिक न्याय का मामला है, अपितु सतत विकास में स्मार्ट निवेश भी है।

प्रीलिम्स तथ्य:

1. अरब सागर में निगरानी रखने के लिए ब्रह्मोस से लैस नौसेना का मिनिकॉय बेस

सन्दर्भ: लक्षद्वीप में मिनिकॉय द्वीप पर भारतीय नौसेना के नए बेस की स्थापना, जिसका नाम INS जटायु है, भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति में महत्वपूर्ण घटनाक्रम का प्रतीक है। ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों सहित उन्नत बुनियादी ढांचे और हथियारों से लैस, INS जटायु का उद्देश्य अरब सागर क्षेत्र में भारत की सुरक्षा स्थिति को बेहतर करना है।

पृष्ठभूमि

- दीर्घकालिक क्षमता विकास: INS जटायु का उन्नयन एक व्यापक क्षमता विकास योजना का हिस्सा है जिसका उद्देश्य संचार के महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों (SLOC) के पास सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत की सुरक्षा उपस्थिति को मजबूत करना है।
- सामरिक अवस्थिति: मिनिकॉय द्वीप की मालदीव और अरब सागर में नाइन डिग्री चैनल से निकटता इसे निगरानी और रक्षा अभियानों के लिए महत्वपूर्ण स्थान बनाती है।

मुद्दे

- बढ़ती चीनी नौसेना उपस्थिति: हिंद महासागर में अनुसंधान जहाजों सहित चीनी नौसैनिक गतिविधियों का विस्तार, भारत के लिए इस क्षेत्र में अपनी समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- सुरक्षा चुनौतियाँ: भारत को विभिन्न सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें शासन और शासन-विरोधी तत्त्वों, समुद्री डकैती और समुद्री आतंकवाद से संभावित खतरे शामिल हैं, जिसके लिए मजबूत निगरानी और रक्षा क्षमताओं की आवश्यकता होती है।

महत्त्व

- उन्नत निगरानी: रडार सुविधाओं और तटीय बैटरियों के साथ INS जटायु की तैनाती से भारत की समुद्री निगरानी क्षमताओं में वृद्धि होती है, जिससे खतरों का शीघ्र पता लगाने और प्रतिक्रिया करने में मदद मिलेगी।
- विरोधियों के खिलाफ प्रतिरोध: मिनिकॉय द्वीप पर ब्रह्मोस मिसाइलों की तैनाती प्रतिकूल नौसैनिक मौजूदगी के खिलाफ निवारक के रूप में कार्य करती है और अरब सागर में भारत की रक्षा स्थिति को मजबूत करती है।

2. केंद्र ने पीएम सौर नि:शुल्क बिजली' योजना में बदलाव किया

सन्दर्भ: केंद्र सरकार ने घरों को नि:शुल्क बिजली प्रदान करने के उद्देश्य से रूफटॉप सोलर योजना, पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना में संशोधन पेश किया है। योजना, जो शुरू में सौर प्रणालियों की स्थापना पर पूरी तरह से सब्सिडी देने के लिए लाई गई थी, में अब केवल 60% तक लागत ही वहन होगी, परिवारों को शेष राशि का योगदान करना होगा।

पृष्ठभूमि

- मूल योजना: इस योजना का लक्ष्य सरकार द्वारा पूरी तरह से सब्सिडी प्राप्त नवीकरणीय ऊर्जा सेवा कंपनियों के साथ गठजोड़ के माध्यम से एक करोड़ घरों में छत पर सौर प्रणाली स्थापित करना है।

- संशोधित दृष्टिकोण: संशोधित योजना के तहत, घरों को स्थापना लागत का एक हिस्सा वहन करना होगा, जिसमें सरकार 60% तक की सब्सिडी प्रदान करेगी। उपभोक्ता अपने हिस्से के खर्चों को वहन करने के लिए कम ब्याज, संपार्श्विक-मुक्त ऋण का लाभ उठा सकते हैं।

मुद्दे

- परिवारों पर वित्तीय बोझ: परिवारों को वित्तीय रूप से योगदान करने की आवश्यकता कम आय वाले परिवारों के लिए एक चुनौती पैदा कर सकती है, जिससे सौर ऊर्जा अपनाने की उनकी क्षमता में बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- जटिल वित्तपोषण संरचना: जैसा कि विभिन्न अधिकारियों द्वारा बताया गया है, वित्तपोषण मॉडल में मौजूद विसंगतियां लाभार्थियों और हितधारकों के बीच भ्रम पैदा कर सकती हैं।

महत्त्व

- बिजली बिल में कमी: लागत-साझाकरण व्यवस्था के बावजूद, इस योजना का लक्ष्य नेट-मीटरिंग के माध्यम से भाग लेने वाले घरों के लिए बिजली बिल को कम करना है, जहां उत्पन्न अतिरिक्त सौर ऊर्जा को ग्रिड में वापस भेज दिया जाएगा।
- नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना: छत पर सौर प्रणालियों को अपनाने को प्रोत्साहित करके, यह योजना भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों में योगदान देती है और पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करती है।

3. खाने की थाली की कीमतों के अनुसार फरवरी में शाकाहारी थाली की कीमतें 7% बढ़ीं

संदर्भ: क्रिसिल के मासिक आहार लागत मूल्यांकन से फरवरी के लिए शाकाहारी और मांसाहारी भोजन की थाली की कीमतों में विरोधाभासी रुझान का पता चलता है। जहां प्याज और टमाटर की बढ़ती कीमतों के कारण शाकाहारी थाली की लागत में 7% की वृद्धि हुई, वहीं मांसाहारी थाली की लागत में साल-दर-साल 9% की बड़ी गिरावट देखी गई।

शाकाहारी थाली की लागत

- वृद्धि के कारक: चावल और दालों की कीमतों में वृद्धि के साथ-साथ प्याज और टमाटर की कीमतों में वृद्धि ने शाकाहारी थाली की कीमत में 7% की वृद्धि में योगदान दिया।
- माह-दर-माह गिरावट: साल-दर-साल वृद्धि के बावजूद, शाकाहारी थाली की कीमतों में क्रमिक रूप से 2% की गिरावट आई, जो 7 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गई।
- क्षेत्रीय भिन्नताएँ: कीमत भिन्नता की गणना भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मौजूद इनपुट कीमतों के आधार पर की जाती है, जिससे समग्र थाली की कीमत प्रभावित होती है।

मांसाहारी थाली की कीमत

- साल-दर-साल गिरावट: मांसाहारी थाली की कीमतों में पिछले वर्ष की तुलना में 9% की उल्लेखनीय गिरावट देखी गई।
- ब्रॉयलर की कीमतें: कीमत में गिरावट का मुख्य कारण ब्रॉयलर की कीमतों में 20% की गिरावट है, जो मांसाहारी थाली की कीमत का एक बड़ा हिस्सा है।
- माह-दर-माह वृद्धि: हालांकि, माह-दर-माह आधार पर, मांसाहारी थाली की कीमत में 4% की वृद्धि हुई, जिसका मुख्य कारण कम आपूर्ति और रमज़ान से पहले बढ़ती मांग के कारण ब्रॉयलर की बढ़ती कीमतें हैं।

मुद्दे

- सब्जियों की कीमत में अस्थिरता: प्याज और टमाटर की कीमतों में उतार-चढ़ाव से समग्र आहार की थाली की कीमत वृहत स्तर पर प्रभावित होती है, जिससे परिवारों के लिए चुनौतियाँ पैदा होती हैं।
- आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान: बर्ड फ्लू का प्रकोप और ब्रॉयलर की कीमतों को प्रभावित करने वाले मौसमी कारक आपूर्ति श्रृंखला में कमजोरियों को सामने लाते हैं, जिससे कीमत में उतार-चढ़ाव होता है।

महत्त्व

- मुद्रास्फीति संकेतक: क्रिसिल का खाद्य लागत मूल्यांकन आधिकारिक मुद्रास्फीति डेटा से पहले खाद्य मूल्य रुझानों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, आर्थिक पूर्वानुमान और नीति निर्माण में सहायता करता है।

- घरेलू बजट: परिवारों के लिए अपने बजट को संभालने और उपभोग पैटर्न को समायोजित करने के लिए भोजन की थाली की कीमत की गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है।

समाधान

- आहार का विविधीकरण: आहार संबंधी आदतों में विविधीकरण को प्रोत्साहित करने से कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
- आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करना: बेहतर बुनियादी ढांचे, भंडारण सुविधाओं और रोग प्रबंधन के माध्यम से खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं में लचीलापन बढ़ाने से कीमतों को स्थिर करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है।

4. फ़िलिस्तीन में बस्तियों का विस्तार करना एक 'युद्ध अपराध': संयुक्त राष्ट्र

संदर्भ: संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय ने एक रिपोर्ट जारी की जिसमें कहा गया कि वेस्ट बैंक और पूर्वी येरुशलम में इजरायली बस्तियों की स्थापना और विस्तार को अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत युद्ध अपराध माना जाता है।

बस्ती विस्तार:

- रिपोर्ट में 1 नवंबर, 2022 से 31 अक्टूबर, 2023 तक की अवधि शामिल है, जो वेस्ट बैंक में मौजूदा बस्तियों में आवास इकाइयों की अधिकता में उल्लेखनीय वृद्धि को सामने लाती है, जो 2017 में निगरानी शुरू होने के बाद से उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है।
- हाल के महीनों में नए बस्ती घरों के निर्माण में वृद्धि देखी गई है, जिससे वेस्ट बैंक में संकट बढ़ गया है।

मानवाधिकार संबंधी चिंताएँ:

- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर तुर्क ने इस बात पर जोर दिया कि बसने वालों की हिंसा और बस्ती संबंधी उल्लंघन खतरनाक स्तर तक बढ़ गए हैं, जिससे एक व्यवहार्य फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया है।

- रिपोर्ट में तीन क्षेत्रों में लगभग 3,500 बसने वालों के घर बनाने की इज़राइल की योजना की निंदा की गई है, जिसमें कहा गया है कि इस तरह की कार्रवाइयां अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करती हैं।

कानूनी स्थिति:

- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय के अनुसार, बस्तियों का निर्माण और विस्तार का मतलब इजरायल की आबादी को कब्जे वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित करना है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत युद्ध अपराध के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

महत्त्व

- संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट मानवाधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय कानून को बनाए रखने के लिए बस्ती विस्तार और संबंधित उल्लंघनों के समाधान की तत्काल आवश्यकता पर जोर देती है।
- यह इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान प्राप्त करने की संभावनाओं पर बस्ती गतिविधियों के हानिकारक प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

समाधान

- बस्ती विस्तार को रोकने और अंतर्राष्ट्रीय कानूनी दायित्वों का पालन करने के लिए इज़राइल पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव डाला जाना चाहिए।
- इजरायल निवासियों और फिलिस्तीनियों दोनों के अधिकारों और सुरक्षा को सुनिश्चित करते हुए, दो-राज्य समाधान की दिशा में सार्थक बातचीत को पुनर्जीवित करने के लिए राजनयिक प्रयासों को तेज किया जाना चाहिए।

महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित समाचार उपलब्ध नहीं हैं।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

Q1) पीएम स्वनिधि योजना के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कितने कथन सत्य हैं?

1. इसका उद्देश्य कोविड-19 लॉकडाउन के बाद स्ट्रीट वेंडर को अपना व्यवसाय फिर से शुरू करने के लिए किफायती ऋण प्रदान करना है।
2. इसे आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत लागू किया गया है।
3. लाभार्थी 10,000 रुपये तक का कार्यशील पूंजी ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

निम्नलिखित कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल एक
b. केवल दो
c. सभी तीन
d. इनमे से कोई भी नहीं

उत्तर: c

Q2) लखपति दीदी कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस कार्यक्रम में लखपति दीदी को एक स्वयं सहायता समूह के सदस्य के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसकी वार्षिक घरेलू आय कम से कम एक लाख रुपये हो, जिसका लक्ष्य ग्रामीण महिलाओं के बीच सतत आर्थिक सशक्तिकरण है।
2. यह ग्रामीण महिलाओं की परिवर्तन यात्रा के आधार के रूप में सतत आजीविका प्रथाओं, प्रभावी संसाधन प्रबंधन और सभ्य जीवन स्तर की उपलब्धि को अपनाने पर जोर देता है।
3. इसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा लागू किया गया है

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

a. केवल 1 और 2
b. केवल 2 और 3
c. 1, 2, और 3
d. केवल 1 और 3

उत्तर: a

Q3) खसरा और रूबेला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. खसरा एक वायरल बीमारी है जो अत्यधिक संक्रामक है और मुख्य रूप से बच्चों को प्रभावित करती है।
2. रूबेला एक हल्का संक्रामक रोग है जो गर्भवती महिलाओं के लिए एक बड़ा खतरा पैदा करता है।
3. भारत सरकार ने खसरे को खत्म करने और रूबेला/जन्मजात रूबेला सिंड्रोम (CRS) को नियंत्रित करने के उद्देश्य से MR टीकाकरण अभियान की शुरुआत की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

a. केवल 1 और 2
b. केवल 2 और 3
c. 1, 2, और 3
d. केवल 1 और 3

उत्तर: c

Q4) सक्रिय फार्मास्युटिकल सामग्री (API) के संबंध में निम्नलिखित में से कितने कथन सही हैं?

1. API दवाओं में वे घटक हैं जो चिकित्सीय प्रभावों के लिए उत्तरदायी हैं।
2. किसी विशिष्ट स्थिति के इलाज के लिए सभी दवाओं में केवल एक API होती है।
3. API के उत्पादन में रासायनिक संश्लेषण, किण्वन और प्राकृतिक स्रोतों से अलगाव जैसी प्रक्रियाएं शामिल हो सकती हैं।
4. जिस देश में दवा बेची जाती है, केवल वहीं की फार्मास्युटिकल कंपनियों को API का उत्पादन करने की अनुमति है।

निम्नलिखित कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल एक

b. केवल दो

c. केवल तीन

d. उपर्युक्त सभी

उत्तर: b

Q5) निम्नलिखित में से कौन सा कथन मानव शरीर में B कोशिकाओं और T कोशिकाओं की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) वे शरीर को पर्यावरणीय एलर्जी से बचाते हैं।

(b) वे शरीर के दर्द और सूजन को कम करते हैं।

(c) वे शरीर में प्रतिरक्षादमनकारी (immunosuppressants) के रूप में कार्य करते हैं।

(d) वे शरीर को रोगजनकों से होने वाली बीमारियों से बचाते हैं।

उत्तर: d

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

Q1) उल्लेखनीय आर्थिक विकास के बावजूद, भारत को अपने श्रम बाजार में लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं के कारणों का परीक्षण कीजिए और उन व्यापक रणनीतियों को सामने रखिए जिन्हें सरकार को अधिक औपचारिक रोजगार की ओर संक्रमण के लिए अपनाना चाहिए। (15 अंक,

250 शब्द) (सामान्य अध्ययन - I, सामाजिक मुद्दे)

Despite significant economic growth, India faces persistent challenges in its labour market. Examine the causes of these issues and propose comprehensive strategies that the government should adopt to transition towards more formal employment. (15 marks, 250 words) [GS-1, Social Issues]

Q2) सतत विकास लक्ष्यों (SDG) की सफलता के लिए महिला सशक्तिकरण एवं भागीदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द) (सामान्य अध्ययन - II, सामाजिक न्याय)

Women’s empowerment and participation are pivotal to the success of the Sustainable Development Goals (SDGs). Discuss. (15 marks, 250 words) [GS-2, Social Justice]

(नोटः मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर BYJU'S की वेव साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)